भगत कबीर – सबद ४
सुखु मांगत दुखु आगै आवै ॥
रागु गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३३०

सुखु मांगत दुखु आगै आवै ॥
सो सुखु हमहु न मांगिआ भावै ॥१॥
बिखिआ अजहु सुरति सुख आसा ॥
कैसे होई है राजा राम निवासा ॥१॥ रहाउ ॥
इसु सुख ते सिव ब्रह्म डराना ॥
सो सुखु हमहु साचु करि जाना ॥२॥
सनकादिक नारद मुनि सेखा ॥
तिन भी तन महि मनु नही पेखा ॥३॥
इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥
तन छूटे मनु कहा समाई ॥४॥
गुर परसादी जैदेउ नामां ॥
भगति कै प्रेमि इन ही है जानां ॥५॥
इसु मन कउ नही आवन जाना ॥
जिस का भरमु गइआ तिनि साचु पछाना ॥६॥
इसु मन कउ रूपु न रेखिआ काई ॥
हुकमे होइआ हुकमु बूझि समाई ॥७॥
इस मन का कोई जानै भेउ ॥
इह मनि लीण भए सुखदेउ ॥८॥
जीउ एकु अरु सगल सरीरा ॥
इसु मन कउ रवि रहे कबीरा ॥९॥१॥३६॥

सार: खुशी को अक्सर सांसारिक इच्छाओं पूरा करने से मिलने वाले सुख के रूप में देखा जाता है, जो अस्थायी संतोष प्रदान करती है। जैसे ही एक इच्छा पूरी होती है, नई इच्छाएं उत्पन्न हो जाती हैं जिससे असंतोष का एक चक्र बनता है। दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपराओं से प्राप्त अंतर्दृष्टि सच्ची खुशी पाने के लिए बुद्धिमत्ता प्रदान कर सकती है।

सुखु मांगत दुखु आगै आवै ॥
सुख मांगने पर दुःख आगे आता है अर्थात दुनियावी सुखों की तलाश में ख़ुशी ढूंढना अक्सर दुःख का कारण बनता है।

सो सुखु हमहु न मांगिआ भावै ॥१॥
तो सुख हम को नहीं मांगना अर्थात इन क्षणिक सुखों की तलाश करना व्यर्थ है क्योंकि यह शांति नहीं देते हैं। (१)

बिखिआ अजहु सुरति सुख आसा ॥
लोग बुरी इच्छाएँ मन में रखते हैं लेकिन फिर भी वह मन से शांति चाहते हैं।

कैसे होई है राजा राम निवासा ॥१॥ रहाउ ॥
ऐसे मन में कैसे सर्वव्यापी जागरूकता की एकता निवास कर सकती है। (१)(विराम)

इसु सुख ते सिव ब्रह्म डराना ॥
मोह-माया के आकर्षण का सुख तो बड़े-बड़े ज्ञानी संतों को भी डराता है।

सो सुखु हमहु साचु करि जाना ॥२॥
लुभावने सांसारिक सुखों को ही अक्सर असली सच मान लिया जाता है। (२)

सनकादिक नारद मुनि सेखा ॥

प्राचीन ऋषि-मुनि जैसे सनकादिक, नारद मुनि और सेखा भी।

तिन भी तन महि मनु नही पेखा ॥३॥

मन के रहस्यों को पूरी तरह नहीं जान पाए अर्थात ऐसे विद्वानों ने भी शरीर के भीतर बसे मन की असली स्थिति नहीं जानी है। (३)

इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥

अरे साथियों, इस मन को समझने और इसकी गहराई को जानने की कोशिश करो।

तन छूटे मनु कहा समाई ॥४॥

जब शरीर नष्ट हो जाता है तब मन कहाँ समाता है? (४)

गुर परसादी जैदेउ नामां ॥

मालिक की कृपा से जयदेव और नामदेव, जैसे संतों ने

भगति कै प्रेमि इन ही है जानां ॥५॥

प्रेम और भक्ति से ही मन के सच को पहचाना है। (५)

इसु मन कउ नही आवन जाना ॥

मन के विचार का न कोई आरंभ है, न अंत।

जिस का भरमु गइआ तिनि साचु पछाना ॥६॥

जब मन के भ्रम मिट जाते हैं तब विश्वव्यापी सत्य की पहचान होती है। (६)

इसु मन कउ रूपु न रेखिआ काई ॥
मन का कोई रूप, रेखा या सीमा नहीं होती।

हुकमे होइआ हुकमु बूझि समाई ॥७॥
प्रकृति के आदेश से ही मन में विचार उत्पन्न होते हैं। इसी इच्छा के अनुसार ज्ञान को समझा और सम्मिलित किया जाता है। (७)

इस मन का कोई जानै भेउ ॥
क्या कोई इस मन की गहराई और रहस्य को समझ सकता है?

इह मनि लीण भए सुखदेउ ॥८॥
जब मन स्थिर और शांत होता है तब असली सुख प्राप्त होता है। (८)

जीउ एकु अरु सगल सरीरा ॥
सभी जीवों प्राणियों में एक ही चेतना की ऊर्जा का वास है।

इसु मन कउ रवि रहे कबीरा ॥९॥१॥३६॥
कबीर कहते हैं कि इस मन पर मैं लगातार ध्यान करता हूँ। (९)(१)(३६)

तत्त्व: भगत कबीर कहते हैं कि सभी प्राणियों में एक ही चेतना की ऊर्जा निवास करती है, इस गहन सत्य पर ध्यान देना ज़रूरी है। इस विचार पर लगातार चिंतन करके वह आंतरिक शांति प्राप्त करते हैं। इस अभ्यास के द्वारा भगत कबीर सभी जीवों के अंतर्संबंध की सराहना कर अपने भीतर सद्भावना पैदा करते हैं। यह विचार एक संतुष्ट जीवन की ओर मार्गदर्शन करता है।

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com